आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 30/03/2026; Accepted: 31/03/2026; Published: 2/04/2026

लेख

साहित्य जगत को प्रो. तिप्पेस्वामी जी का योगदान

डॉ. सी. जय शंकर बाबु

संस्थापक संपादक, 'युग मानस', प्रधान संपादक, 'आंतर भारती',

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय),

पुदुच्चेरी – 605 014,

मोबाइल – 94420 23405, 94420 71407,

ई-मेल – professorbabuji@gmail.com

डॉ. सी. जय शंकर बाबु, साहित्य जगत को प्रो. तिप्पेस्वामी जी का योगदान, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(162 -170)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

भारतीय साहित्य की बहुभाषिक परंपरा में अनुवाद, तुलनात्मक अध्ययन और भाषाई समन्वय का विशेष महत्व रहा है। भारत जैसे बहुभाषी देश में विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के मध्य संवाद स्थापित करने में अनुवाद साहित्य एक प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करता है। कर्नाटक के प्रतिष्ठित विद्वान, अनुवादक, आलोचक और शिक्षाविद प्रो. तिप्पेस्वामी ने हिंदी और कन्नड़ साहित्य के बीच एक सुदृढ़ सेतु का निर्माण करते हुए भारतीय साहित्य को समृद्ध करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

प्रो. तिप्पेस्वामी ने लगभग पाँच दशकों तक हिंदी शिक्षण, अनुसंधान, लेखन, संपादन और अनुवाद के माध्यम से साहित्यिक गतिविधियों को नई दिशा प्रदान की है। उन्होंने हिंदी और कन्नड़ की अनेक महत्वपूर्ण कृतियों का परस्पर अनुवाद किया, जिससे दोनों भाषाओं के पाठकों को एक-दूसरे की साहित्यिक परंपराओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके साहित्यिक योगदान में अनुवाद-साहित्य, मौलिक लेखन, तुलनात्मक अध्ययन, संपादन-कार्य तथा हिंदी प्रचार-प्रसार जैसे विविध आयाम शामिल हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रो. तिप्पेस्वामी जी के साहित्यिक योगदान का समग्र और समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें उनके साहित्यिक व्यक्तित्व, अनुवाद-साहित्य में योगदान, मौलिक लेखन, तुलनात्मक साहित्य, संपादन-कार्य तथा भारतीय भाषाई एकता में उनकी भूमिका का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि प्रो. तिप्पेस्वामी का साहित्यिक अवदान भारतीय भाषाओं के समन्वय और सांस्कृतिक एकता के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण और स्थायी है।

बीज शब्द

प्रो. तिप्पेस्वामी, हिंदी–कन्नड़ साहित्य, अनुवाद साहित्य, तुलनात्मक अध्ययन, हिंदी प्रचार-प्रसार, साहित्यिक योगदान, भारतीय भाषाएँ, भाषाई समन्वय

प्रस्तावना

भारत बहुभाषिकता और सांस्कृतिक विविधता का देश है, जहाँ विभिन्न भाषाएँ और साहित्यिक परंपराएँ एक-दूसरे के साथ निरंतर संवाद करती रही हैं। भारतीय संविधान ने भी विभिन्न भाषाओं को समान महत्व प्रदान करते हुए भाषाई विविधता को राष्ट्रीय एकता का आधार माना है। इस बहुभाषिक समाज में अनुवाद का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है, क्योंकि अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के साहित्य और संस्कृति एक-दूसरे के निकट आते हैं।

अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं, बल्कि विचारों और संस्कृतियों का संवाद है। भारतीय साहित्य के विकास में अनेक विद्वानों ने भाषाओं के मध्य सेतु-निर्माण का कार्य किया है। कर्नाटक के वरिष्ठ साहित्यकार और अनुवादक प्रो. तिप्पेस्वामी इस परंपरा के प्रमुख प्रतिनिधि हैं।

उन्होंने हिंदी और कन्नड़ साहित्य के बीच साहित्यिक संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से अनेक महत्वपूर्ण अनुवाद कार्य किए तथा तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया। उनका साहित्यिक जीवन लगभग पाँच दशकों तक फैला हुआ है, जिसमें उन्होंने शिक्षण, अनुसंधान, लेखन, संपादन और अनुवाद के माध्यम से हिंदी और कन्नड़ साहित्य की सेवा की है।

उनका मानना है कि— "भारतीय साहित्य में अभिव्यक्त जनमानस के विचारों को समझने के लिए अनुवाद एक प्रभावी माध्यम है।" यह विचार उनके साहित्यिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है, जिसमें भाषा और साहित्य को सांस्कृतिक एकता का साधन माना गया है।

प्रो. तिप्पेस्वामी का जीवन-वृत्त एवं साहित्यिक प्रेरणा

प्रो. तिप्पेस्वामी भारतीय साहित्य को समर्पित एक वरिष्ठ विद्वान, अनुवादक, आलोचक और शिक्षक हैं। उनकी मातृभाषा कन्नड़ है, परंतु उन्होंने हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त कर दोनों भाषाओं में समान अधिकार प्राप्त किया।

उनके साहित्यिक जीवन की प्रेरणा उनके मामा स्वर्गीय श्री बी.सी. सिद्धनंजप्पा से मिली, जो हिंदी प्रचार-प्रसार आंदोलन से जुड़े हुए थे और महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित थे। उनके मामा हिंदी को राष्ट्रभक्ति का माध्यम मानते थे और हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रूप से कार्य करते थे।

बचपन से ही प्रो. तिप्पेस्वामी ने हिंदी और कन्नड़ साहित्य का गंभीर अध्ययन किया। जब वे दोनों भाषाओं की रचनाएँ पढ़ते थे, तब उन्हें यह अनुभव हुआ कि यदि इन भाषाओं के बीच साहित्य का आदान-प्रदान हो, तो दोनों भाषा-समुदायों को लाभ प्राप्त होगा। यही विचार आगे चलकर उनके अनुवाद कार्य की प्रेरणा बना। वे अनुवाद क्षेत्र को इतने समर्पित हो गया कि वे अनुवाद कार्य के बिना एक दिन भी नहीं बिताते थे। यदि कोई अन्य कार्य नहीं है तो वे प्रातः और शाम टहलने का समय मात्र अपना समय मानते थे शेष समय अनुवाद कार्य में व्यतीत करते थे। वे अनुवाद जगत को समर्पित तपस्वी थे। यह भी तथ्य है कि मैसूर में 369, ए.बी. ब्लॉक, कुवेंपु नगर स्थित अपने स्थायी निवास को उन्होंने 'अनुवाद' नाम दिया है।

उनकी साहित्यिक दृष्टि में भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय एकता का आधार है।

प्रो. तिप्पेस्वामी का अनुवाद-साहित्य : स्वरूप और विकास

प्रो. तिप्पेस्वामी का अनुवाद-साहित्य उनके शैक्षिक और साहित्यिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। उन्होंने चार दशकों से अधिक समय तक अनुवाद-कार्य में सक्रिय भूमिका निभाई है।

उनकी अनुवाद-यात्रा का प्रारंभ शिक्षण-कार्य के दौरान हुआ। जब वे तिपटूर के कल्पतरु कॉलेज में अध्यापक थे, तब उन्हें मोहनलाल महतो 'वियोगी' के ऐतिहासिक उपन्यास महामंत्री को पढ़ाने का अवसर प्राप्त हुआ। छात्रों की रुचि और उत्साह को देखकर उन्होंने इस उपन्यास का कन्नड़ में अनुवाद करने का निर्णय लिया। इस अनुवाद को कन्नड़ पाठकों ने अत्यंत सराहा और बाद में यह मैसूर विश्वविद्यालय में पाठ्यपुस्तक के रूप में स्वीकृत हुआ। इस सफलता ने उन्हें अनुवाद-कार्य में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

इसके पश्चात उन्होंने हिंदी और कन्नड़ की अनेक महत्वपूर्ण कृतियों का अनुवाद किया और दोनों भाषाओं के साहित्यिक संबंधों को सुदृढ़ बनाने का कार्य किया।

हिंदी से कन्नड़ में अनुवाद : प्रमुख कृतियाँ और उनका महत्व

प्रो. तिप्पेस्वामी ने हिंदी से कन्नड़ में अनेक महत्वपूर्ण कृतियों का अनुवाद किया है। इन कृतियों के माध्यम से उन्होंने हिंदी साहित्य को कन्नड़ पाठकों तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

उनकी प्रमुख अनूदित कृतियाँ ये हैं:

महामंत्री (उपन्यास); प्रेत (उपन्यास); सरदार वल्लभ भाई पटेल (जीवनी); गंगा-कावेरी (कहानियाँ); आ दिनगळु (उपन्यास); अंधायुग (नाटक); डॉ. लोहिया (जीवनी); दीक्षे (उपन्यास); नेले (उपन्यास); निर्मला (उपन्यास); रावी नदिय दंडेयल्लि (नाटक); सिंहासन खाली है (नाटक); मुट्टदिरु नेरळ मनवे (उपन्यास); रानी नागफणी (उपन्यास)। इन कृतियों के अलावा कई अन्य कृतियों का भी उन्होंने अनुवाद किया है।

इन कृतियों के अनुवाद के माध्यम से उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध विधाओं—उपन्यास, नाटक, जीवनी और कहानी—को कन्नड़ पाठकों तक पहुँचाया।

कन्नड़ से हिंदी में अनुवाद : भाषायी सेतु-निर्माण

प्रो. तिप्पेस्वामी ने कन्नड़ से हिंदी में भी महत्वपूर्ण कृतियों का अनुवाद किया है। उनकी प्रमुख कन्नड़-हिंदी अनूदित कृतियाँ ये हैं: भारतीपुर (उपन्यास); उद्भव (उपन्यास); रथमुसल (नाटक)। इन कृतियों के अलावा कई अन्य कृतियों का भी उन्होंने अनुवाद किया है।

इन अनुवादों के माध्यम से उन्होंने कन्नड़ साहित्य को हिंदी पाठकों तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

तुलनात्मक अध्ययन और अनुवाद

प्रो. तिप्पेस्वामी के साहित्यिक कार्यों में तुलनात्मक अध्ययन का विशेष स्थान है। तुलनात्मक साहित्य उनकी विशेष रुचि का विषय रहा है। उन्होंने हिंदी और कन्नड़ के प्रमुख कवियों और लेखकों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

उन्होंने हिंदी और कन्नड़ के मध्ययुगीन कवियों कबीर और सर्वज्ञ के व्यक्तित्व और कृतित्व का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है, जिसमें इन दोनों कवियों की सामाजिक चेतना और मानवीय दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है।

उनके तुलनात्मक अध्ययन केवल साहित्यिक तुलना तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना के व्यापक संदर्भ में भारतीय साहित्य की एकता को उजागर करते हैं।

सांस्कृतिक अस्मिता और राष्ट्रीय चेतना

प्रो. तिप्पेस्वामी के आलोचनात्मक लेखों में राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता का विशेष महत्व दिखाई देता है। उनकी कृति अस्मिता की खोज में संकलित लेखों में भारतीय साहित्य और संस्कृति के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है।

इस संग्रह में "कन्नड़ काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना" तथा "कुवेंपु और पंत के काव्य में चित्रित भारत माता" जैसे लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिनमें भारतीय राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक एकता के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट किया गया है।

इन लेखों के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध किया है कि साहित्य और अनुवाद दोनों राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करने के प्रभावी साधन हैं।

मैसूर विश्वविद्यालय की अनुवाद परियोजनाओं में योगदान

मैसूर विश्वविद्यालय में हिंदी और कन्नड़ भाषाओं के बीच साहित्यिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण अनुवाद परियोजनाएँ संचालित की गईं।

इन परियोजनाओं के संचालन में प्रो. तिप्पेस्वामी और उनकी टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप हिंदी और कन्नड़ के बीच साहित्यिक संबंध सुदृढ़ हुए और राष्ट्रीय स्तर पर भाषायी समन्वय की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई।

कुलपति द्वारा व्यक्त विचारों के अनुसार, अनुवाद विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित करने का प्रभावी माध्यम है। उन्होंने अनुवाद को "सुई" के समान बताया, जो विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को जोड़ने का कार्य करती है।

प्रो. तिप्पेस्वामी की आलोचना-शैली और साहित्यिक व्यक्तित्व

प्रो. तिप्पेस्वामी की आलोचना-शैली सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली है। उनकी भाषा में सहजता और विचारों में तार्किकता दिखाई देती है।

डॉ. एम. एस. कृष्णमूर्ति ने उनके आलोचनात्मक लेखों के संबंध में यह मत व्यक्त किया है कि उनकी भाषा और विचारों की प्रस्तुति शैली अत्यंत आकर्षक है, जिसके कारण उनके निबंध पाठकों के लिए अत्यंत पठनीय बन गए हैं।

उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि अस्मिता की खोज हिंदी साहित्य को प्रो. तिप्पेस्वामी का एक महत्वपूर्ण योगदान है।

अनुवाद-साहित्य का समालोचनात्मक मूल्यांकन

प्रो. तिप्पेस्वामी के अनुवाद कार्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- भाषाई सरलता और सटीकता
- मूल कृति की भावनात्मक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का संरक्षण
- पाठकों की समझ के अनुरूप भाषा का चयन
- सांस्कृतिक संदर्भों का संतुलित प्रस्तुतीकरण

अनुवाद साहित्य के मामले में उनका विचार था वह दूसरी भाषा परिवेश के लोगों को भी लक्ष्य भाषा की संस्कृति को समझने का अवसर मिलना चाहिए। मगर भाषा सरल व सहज हो । मूल की सांस्कृति विशिष्टता के संरक्षण की ओर वे विशेष ध्यान देते थे । राष्ट्रीय एकता की भावना को ध्यान में रखते हुए सांस्कृतिक निष्ठा पर विशेष ध्यान रखते थे ।

उनके अनुवाद कार्य ने—

- हिंदी और कन्नड़ साहित्य के बीच सांस्कृतिक संवाद स्थापित किया ।
- पाठकों को विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक परंपराओं से परिचित कराया ।
- राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय को सुदृढ़ किया ।

उनके समग्र अनुवाद के अवधान के आधार पर हम कह सकते हैं कि उनका अनुवाद-कार्य केवल साहित्यिक उपलब्धि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समन्वय का उदाहरण है। उन्होंने हिंदी और कन्नड़ के बीच जो साहित्यिक सेतु निर्मित किया, वह भारतीय बहुभाषिकता की भावना को सुदृढ़ करता है।

मौलिक लेखन और आलोचना में योगदान

प्रो. तिप्पेस्वामी केवल अनुवादक ही नहीं, बल्कि एक समर्थ आलोचक और लेखक भी हैं। उन्होंने हिंदी और कन्नड़ साहित्य के विभिन्न विषयों पर मौलिक लेखन किया है।

प्रो. तिप्पेस्वामी की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ

कन्नड़ में

- मैथिलीशरणगुप्त
- शतमानद शिखरगळु
- प्रेमचंद

हिंदी में

- समागम
- अस्मिता की खोज

इन कृतियों में उन्होंने साहित्यिक विश्लेषण के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों को भी स्पष्ट किया है।

व्यंग्य साहित्य में योगदान

प्रो. तिप्पेस्वामी ने हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई पर शोध कार्य किया। उनके व्यंग्य साहित्य से प्रेरित होकर उन्होंने कन्नड़ में व्यंग्य लेखन की ओर ध्यान दिया।

उनका व्यंग्य-संग्रह— 'होन्नशूल मत्तु इतरे व्यंग्य विनोदगळु' । कन्नड़ साहित्य में एक महत्वपूर्ण कृति मानी जाती है।

तुलनात्मक साहित्य में योगदान

तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र में प्रो. तिप्पेस्वामी का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने हिंदी और कन्नड़ के प्रमुख कवियों और लेखकों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

उनके अनुसार—"तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य किसी साहित्य को श्रेष्ठ या निकृष्ट सिद्ध करना नहीं है, बल्कि समानताओं और विशिष्टताओं को उजागर करना है।"

यह दृष्टिकोण तुलनात्मक साहित्य की आधुनिक अवधारणा के अनुरूप है, जिसमें साहित्यिक विविधता को सम्मान देते हुए सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा दिया जाता है।

प्रो. तिप्पेस्वामी ने हिंदी के संत कवि कबीर और कन्नड़ के संत कवि सर्वज्ञ के बीच तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

उनकी दृष्टि में दोनों कवियों की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

- सामाजिक कुरीतियों का विरोध
- धार्मिक आडंबरों की आलोचना
- सरल भाषा में गहन विचारों की अभिव्यक्ति

कबीर और सर्वज्ञ दोनों ही जनसामान्य के कवि हैं। उनके साहित्य में लोकजीवन की गहरी झलक मिलती है। तिप्पेस्वामी ने यह सिद्ध किया कि भले ही दोनों कवि अलग-अलग भाषाई क्षेत्रों से आते हैं, फिर भी उनकी चिंतनधारा में अद्‌भुत समानता है। यह समानता भारतीय संस्कृति की एकात्मकता को दर्शाती है।

प्रो. तिप्पेस्वामी ने कन्नड़ के महान कवि कुवेंपु और हिंदी के प्रमुख छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन किया।

दोनों कवियों के काव्य में—

- प्रकृति का सौंदर्य
- मानवतावाद
- राष्ट्रीय चेतना

स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

तिप्पेस्वामी ने यह बताया कि कुवेंपु और पंत दोनों ही भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि कवि हैं, जिनकी रचनाओं में भारत माता की छवि और राष्ट्रीय गौरव की भावना प्रकट होती है।

कन्नड़ साहित्य की गरिमा को प्रतिष्ठित करने में प्रो. तिप्पेस्वामी का बड़ा योगदान है । कन्नड़ साहित्य के कई कवियों, लेखकों के साहित्य पर उन्होंने काफ़ी लिखने के साथ-साथ उनके साहित्य का अनुवाद खुद भी

किया है, मैसूर विश्वविद्यालय की परियोजनाओं के तहत दूसरों से भी करवाकर उनको संपादित रूप में प्रकाशित किया है। कन्नड़ साहित्यकारों में प्रतिष्ठित कुवेंपु उनके अत्यंत प्रिय थे। कुवेंपु के प्रकृति प्रेम पर प्रो. तिप्पेस्वामी ने लिखा है - "कुवेंपु की प्रकृति उपासना और सौंदर्योपासना का मूल स्थान यही कुप्पळिळ है जो कि मलेनाडु का रमणीय पर्वतीय प्रदेश है। पल-पल में परिवर्तित होनेवाली प्रकृति की रम्य छटा ने इनके बाल मन को आकृष्ट किया। प्रकृति के प्रति अपने आकर्षण के संबंध में कुवेंपु लिखते हैं – 'उस अरण्य के मनोहर भयंकर दृश्यों को सुरक्षित स्थान पर बैठकर मुग्ध विस्मित होकर देखता जाता था। प्रायः उन्हीं दिनों में होगा, सह्याद्री की अरण्य देवी ने मेरी कवि चेतना में वरदान के रूप में रहकर सुप्तावस्था में मौजूद मेरे सौंदर्यबोध को जागृत किया और उसे प्रकृति प्रेम की दीक्षा दी, प्रकृति प्रेम को मुझे समर्पित किया।' कुवेंपु के बचपन के दो आकर्षणीय अंश थे, पहला, नित्य श्यामल अरण्याच्छादित पर्वतश्रेणियाँ और दूसरा कविशैल पर जाकर वहाँ से क्षितिज तक फैली प्रकृति का मनोरम दृश्य जिन्हें देख देखकर कुवेंपु भाव विभोर हो जाते थे, ध्यानस्थ हो जाते थे, सूर्यास्त और सूर्योदय तो इन्हें दूसरे ही लोक में ले जाते थे। इन्हें देखते-देखते लौकिक संसार की सुधबुध खोकर प्रकृति की गोद में ध्यान किया करते थे।"

यह उद्धरण न केवल तिप्पेस्वामी जी के विचार जानने में सहायक, बल्कि उनकी भाषा की विशिष्टता को भी हम आंक सकते हैं।

संपादन और पत्रिका-कार्य में योगदान

प्रो. तिप्पेस्वामी ने साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादन के माध्यम से भी साहित्य जगत को महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उन्होंने—

- मैसूर विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका 'मानसी' का कई वर्षों तक संपादन किया और कई विशेषांकों के संपादक रहे हैं।
- जे.एस.एस. विद्यापीठ, मैसूर से प्रकाशित पत्रिका 'प्रसाद' का संपादन किया

उनके संपादन में प्रकाशित अनेक अंक उच्च गुणवत्ता और शोधपरक दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध हुए। इसके अलावा मैसूर विश्वविद्यालय को प्राप्त उत्तर प्रदेश सरकार के अनुदान सदुपयोग करते हुए कन्नड़ की कई प्रमुख कहानियों और कविताओं का अनुवाद करवाकर उनका सुयोग्य संपादन किया है।

सामासिक संस्कृति और भाषाई सेतु निर्माण

प्रो. तिप्पेस्वामी का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने हिंदी और कन्नड़ के बीच एक सेतु का निर्माण किया।

उन्होंने यह सिद्ध किया कि—

- भारतीय संस्कृति विभिन्न भाषाओं का समन्वय है
- भाषा की विविधता सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है
- अनुवाद और तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से भाषाओं के बीच संवाद स्थापित किया जा सकता है

उनका यह विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है कि अनुवाद और तुलनात्मक साहित्य "जोड़ने वाली सुई" हैं, तोड़ने वाला हथौड़ा नहीं।

हिंदी शिक्षण और प्रचार-प्रसार में योगदान

प्रो. तिप्पेस्वामी ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उन्होंने—

- हिंदी शिक्षण को प्रोत्साहित किया ।
- हिंदी और कन्नड़ साहित्य के बीच सांस्कृतिक संवाद स्थापित किया ।
- हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया ।

उन्होंने मैसूर विश्वविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए उच्च शिक्षा और अनुसंधान को नई दिशा प्रदान की।

सेवानिवृत्ति के पश्चात भी उन्होंने मानस गंगोत्री (मैसूर) स्थित बाबू जगजीवनराम अध्ययन पीठ में विज़िटिंग प्रोफ़ेसर के रूप में अपनी सेवाएँ दीं।

भारतीय भाषाई एकता और सांस्कृतिक समन्वय में योगदान

प्रो. तिप्पेस्वामी का साहित्यिक योगदान केवल साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय भाषाई एकता और सांस्कृतिक समन्वय को सुदृढ़ करने में भी महत्वपूर्ण है।

उन्होंने अपने अनुवाद कार्य के माध्यम से यह सिद्ध किया कि— भाषाएँ भिन्न हो सकती हैं, परंतु संस्कृति और मानवीय भावनाएँ समान होती हैं।

उनका कार्य भारतीय भाषाओं के बीच सांस्कृतिक एकता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

समालोचनात्मक मूल्यांकन

प्रो. तिप्पेस्वामी का साहित्यिक योगदान बहुआयामी और दीर्घकालीन है। उन्होंने अनुवाद, लेखन, संपादन और शिक्षण के माध्यम से हिंदी और कन्नड़ साहित्य के बीच एक सशक्त संवाद स्थापित किया है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

1. भाषाई सेतु-निर्माण
2. अनुवाद की सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका
3. तुलनात्मक साहित्य की वैज्ञानिक दृष्टि
4. हिंदी प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान

सीमाएँ और संभावनाएँ

यद्यपि उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, फिर भी उनके कार्यों पर व्यापक राष्ट्रीय स्तर पर शोध की आवश्यकता है। विशेष रूप से—

- उनके अनुवादों की तुलनात्मक समीक्षा
- हिंदी–कन्नड़ साहित्यिक संबंधों पर उनके प्रभाव का विश्लेषण
- भारतीय भाषाओं के समन्वय में उनके योगदान का विस्तृत अध्ययन

इन विषयों पर भविष्य में और अधिक शोध किया जा सकता है। यह खुशी की बात है कि कर्नाटक मुक्त विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के एक शोधार्थी ने डॉ. अशोक कांब्ले के निर्देशन में अनुवाद साहित्य को तिप्पेस्वामी के योगदान पर शोध कार्य सुसंपन्न हुआ है।

उपसंहार

प्रो. तिप्पेस्वामी भारतीय साहित्य के ऐसे विद्वान हैं, जिन्होंने हिंदी और कन्नड़ साहित्य के बीच सेतु-निर्माण का कार्य करते हुए दोनों भाषाओं की साहित्यिक परंपराओं को समृद्ध किया है। उन्होंने अनुवाद, लेखन, संपादन और शिक्षण के माध्यम से भारतीय भाषाओं की एकता और सांस्कृतिक समन्वय को सुदृढ़ किया है। उनका साहित्यिक जीवन यह प्रमाणित करता है कि— "अनुवाद केवल भाषा का परिवर्तन नहीं, बल्कि संस्कृति और विचारों का संवाद है।"

इस प्रकार, साहित्य जगत को प्रो. तिप्पेस्वामी का योगदान एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में स्थापित है और उनका कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बना रहेगा। प्रो. तिप्पेस्वामी का अनुवाद-साहित्य भारतीय भाषाओं के बीच सांस्कृतिक समन्वय और राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण साधन है। उन्होंने हिंदी और कन्नड़ के बीच जो साहित्यिक सेतु निर्मित किया, वह केवल भाषायी उपलब्धि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समन्वय और राष्ट्रीय एकता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान है। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व अनुवाद, तुलनात्मक अध्ययन और आलोचना—तीनों क्षेत्रों में समान रूप से सक्रिय रहा है। भविष्य में भी उनका अनुवाद-साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास और सांस्कृतिक समन्वय के लिए प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

संदर्भ -

1. तिप्पेस्वामी, पुनीत. (1996). अस्मिता की खोज. चारित्र प्रिंटर्स अंड पब्लिशर्स. मैसूर।
2. प्र.सं. तिप्पेस्वामी. (2006). राष्ट्रकवि कुवेंपु की कविताएँ. लोकभारती प्रकाशन. इलाहबाद।
3. प्र.सं. तिप्पेस्वामी. (2004). कन्नड़ की श्रेष्ठ कहानियाँ. लोकभारती प्रकाशन. इलाहबाद।
4. प्र.सं. कुसुमगीता (1997). आधुनिक कन्नड़ काव्य. हिंदी अध्ययन विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय, मानस गंगोत्री, मैसूर।

****